कुँवर नारायण

कवि परिचय :– कुँवर नारायण आधुनिक हिंदी कविता के सशक्त कवि हैं। उनका जन्म 19 सितम्बर 1927 को फैजाबाद में हुआ। आप की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा आप ने लखनऊ से पूरी की। आपने अनेक देशों की यात्राएँ की।

कुँवर नारायण ने 1950 ई० के आसपास लिखना शुरू किया। आपने चिंतापरक निबंध लिखे, कहानियों, सिनेमा और अन्य कलाओं पर समीक्षा भी लिखी। आप को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। जैसे–कबीर सम्मान, व्यास सम्मान, लोहिया सम्मान, साहित्य अकादमी सम्मान, ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि।

कविता के बहाने

पाठ परिचय :– कवि का कहना है चिड़िया की उड़ान की एक सीमा है। फूल के खिलने के साथ ही उसकी परिणति निश्चित हो जाती है। बच्चों के सपने असीम हैं, उनके सपने उनके खेलों मे उजागर होते हैं। इसी प्रकार कवि की कल्पनाएँ उनकी कविता में झलकती हैं। जब एक कवि लिखता है, तो समय की, भाषा की, घर की सब सीमाएँ टूट जाती हैं।

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिडिया क्या जाने ?

व्याख्या :– कवि का कहना है चिडिया की उडान व कवि की कल्पना एक जैसे हैं, परन्तु कवि की कल्पना असीमित है। वो किसी भी विषय पर कल्पना कर सकता है। उसकी कल्पनाएँ व्यक्ति, समाज, देश से ऊपर होती हैं। इस लिए कवि की कल्पना की तुलना चिड़िया की उड़ान से करना उचित नहीं।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल खड़ी बोली
2. चिडिया क्या जाने ? प्रश्न अलंकार
3. कविता का मानवीकरण किया गया है मानवीकरण अलंकार ।

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने ।
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने
फूल क्या जाने ?

शब्दार्थ :– महकना = सुगंध फैलना

व्याख्या :– कवि का सोचना या फूल का विकसित होना और कविता का विकसित होना एक जैसा है। परन्तु फिर वो सोचते हैं–फूल एक निश्चित समय के लिए खिलता है, अपनी सुगंध फैलाता है। फिर वो मुरझा जाता है। न फूल रहता है और न उसकी सुगंध। परन्तु कवि की कविता जब एक बार विकसित हो जाती है, तो वह अपनी सुगन्ध अर्थात् अपना प्रभाव घर, समाज, देश की सीमाओं को तोड़ कर डालती है।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सहज सरल खड़ी बोली
2. मुरझाए महकने अनुप्रास अलंकार
3. फूल क्या जाने ? प्रश्न अलंकार

कविता एक खेल है बच्चों के बहाने
बाहर भीतर
यह घर, वह घर
सब घर एक कर देने के माने
बच्चा ही जाने ।

व्याख्या :– कवि का कहना है कविता बच्चों के खेल की तरह होती है। बच्चे जब खेलते हैं, तो कहीं भी किसी के साथ खेल सकते हैं। उनके मन में अपने पराये का भेद भाव भी नहीं होता, सब को अपना बना लेते हैं। ठीक इसी प्रकार जब कवि जब अपनी कविता को विकसित करता है, तो अपने मन के भाव, दूसरों के हृदय के भावों को शब्द प्रदान करता है और कविता देश, काल की सीमाओं को तोड़ कर अपना प्रभाव डालती है।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना

VASUNDHARAHINDI.COM

बात सीधी थी पर

पाठ परिचय :– कवि का कहना है कि हमें सीधी सरल बात सीधे सरल शब्दों में कहनी चाहिए। भाषा के प्रदर्शन के फेर में बात उलझने लगती है। जैसे कवि भाषा की उलझन से बाहर निकलना चाहता है, वो और उलझता जाता है। परिणाम स्वरूप बात का मूल प्रभाव ही समाप्त हो जाता है। अर्थात् सीधी सादी बात को सीधी सादी भाषा में व्यक्त करना चाहिए।

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
जरा टेड़ी फँस गई ।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा पलटा
तोड़ा मरोड़ा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए
लेकिन इससे भाषा के साथ–साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई ।

शब्दार्थ :– सीधी = सरल, टेढ़ी फँसना = बुरी तरह फसना, पेचीदा = कठिन

व्याख्या :– कवि कहते हैं– मैं अपनी बात सीधी सरल भाषा में कहना चाहता था , परन्तु मैं भाषा के चक्कर में फँस गया अर्थात् मैंने कलात्मक भाषा में अपनी बात कहनी चाही। परिणाम स्वरूप बात अपनी सहजता खोती चली गई। बात को दोबारा सहज सरल बनाने के लिए मैंने शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों को उल्टा पलटा, ये सोच कर कि या तो बात सरल हो जाये या फिर भाषा के चक्कर से बाहर निकल आये, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। बात सरल होने के स्थान पर और कठिन होती चली गई।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सहज सरल साहित्यिक खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. उर्दू के शब्दों का सुन्दर प्रयोग–बात, चक्कर, कोशिश, पेचीदा
4. मुहावरों का सुन्दर प्रयोग–टेड़ी फँसना, पेचीदा होना
5. साथ–साथ पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार

सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता जा रहा था
क्योंकि इस करतब पर मुझे
साफ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी औ वाह–वाह ।

शब्दार्थ :– धैर्य = धीरज, बेहतर = बुरी तरह, करतब = कार्य, तमाशबीन = तमाशा देखने वाले (चाटूकार लोग), शाबाशी = प्रशंसा

VASUNDHARAHINDI.COM

व्याख्या :– भाषा की जटिलता के कारण बात मुश्किल हो गई थी। इस विषय पर मैंने धीरज से नहीं सोचा। बात रूपी पेच को खोलने के स्थान पर मैं भाषा की दीवार में उसे कसता जा रहा था, क्योंकि भाषा को जटिल बनाने से मेरे झूठे प्रशन्सक, तमाशबीन लोग मेरी प्रशन्सा कर रहे थे।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सहज सरल
2. उर्दू के शब्दों का सुन्दर प्रयोग–मुश्किल, पेंच, बजाए, बेतरह, करतब, साफ, तमाशबीन, शाबाशी आदि
3. वाह–वाह पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था
जोर जबरदस्ती से
बात की चूडी मर गई
और वह भाषा में बेकार घूमने लगी ।
हार कर मैंने उसे कील की तरह
उसी जगह ठोंक दिया
ऊपर से ठीक ठाक
पर अंदर से
न तो उस में कसाव था
न ताकत ।
बात ने जो एक शरारती बच्चे की तरह
मुझसे खेल रही थी
मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा –
क्या तुमने भाषा को
सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा ?

शब्दार्थ :– जोर–जबरदस्ती = अधिक कोशिश, सहूलियत = सहजता से, बरतना = व्यवहार में लेना

व्याख्या :– अंत में वही हुआ जिस का कवि को डर था। बात सुधारने की कोशिश में वो और जटिल होती चली गई। जिस प्रकार दिवार में पेच कसते जाने से पेच की चूड़ी मर जाती है और उसे दिवार में ठोकना पड़ता है। मेरी बात भी जब प्रभावहीन हो गई तो मैंने अपनी बात को वैसा ही छोड़ दिया। अब उस में भाव अभिव्यक्ति की क्षमता नहीं थी। थक कर कवि अपना पसीना पोंछने लगे। कवि को पसीना पोंछते हुए बात एक शरारती बच्चे की तरह कवि से पूंछने लगी– क्या तुमने भाषा को सहजता से प्रयोग करना नहीं सीखा ?

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सहज सरल। उर्दू के शब्दों का सुन्दर प्रयोग –जबरदस्ती, चूड़ी, बेकार, कसाव, ताकत, शरारती, सहूलियत बरतना आदि।
2. छन्द मुक्त रचना
3. कील की तरह, शरारती बच्चा उपमा अलंकार
4. जोर–जबदस्ती, पसीना पोंछना–अनुप्रास अलंकार

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. इस कविता के बहाने बताएँ कि सब घर एक कर देने के माने क्या है ?
उत्तर :– सब घर एक कर देने के माने का अर्थ है भेदभाव, अलगाववाद को समाप्त करके सभी को एक समझना। जिस प्रकार बच्चे जब खेलते है धर्म, जाति, सम्प्रदाय, छोटा–बड़ा, अमीर–गरीब आदि को भूल कर खेलते हैं। ठीक उसी प्रकार कवि जब कविता लिखता है भाषा, सम्प्रदाय जात, देश काल की दीवार तोड़ कर लिखता है।

प्रश्न 2. उड़ने और खिलने का कविता से क्या संबंध बनता है ?
उत्तर :– चिडियां की उड़ान सीमित होती है। वो एक निश्चित दायरे में उड़ती है। परन्तु कवि की कल्पना की उड़ान असीमित है। वो किसी विषय पर कल्पना कर सकता है।

कवि का कहना है–फूल एक निश्चित समय के लिए खिलता है और सुगन्ध बिखेरता है। उसके बाद मुरझा जाता है , सुगंधहीन हो जाता है। परन्तु एक कविता जब विकसित हो जाती है ,देश काल की सीमाओं को तोड़कर अपना प्रभाव डालती है ,वो सनातन हो जाती है।

प्रश्न 3. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं ?
उत्तर :– बच्चों की क्रीड़ा का क्षेत्र व्यापक होता है। बच्चे खेलते समय देश, काल, जाति, सम्प्रदाय आदि का ध्यान नहीं करते। बच्चों की कल्पनाओं का संसार सीमित होता हैं तथा बच्चे किसी भी स्थान पर किसी के भी साथ खेल सकते हैं। ठीक इसी प्रकार कविता भी शब्दों का खेल है। इस के अंग हैं–जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान आदि। इस लिए कविता को बच्चों के समानान्तर रखना उचित है।

प्रश्न 4. कविता के संदर्भ में 'बिना मुरझाए महकने के माने' क्या होते हैं ?
उत्तर :– कवि की कविता जब एक बार विकसित हो जाती है, कभी मुरझाती नहीं। युग–युगान्तर तक मानव समाज को प्रभावित करती है। अपने मूल्यों के द्वारा जैसे तुलसी कृत रामचरित्र मानस कई सौ साल पहले लिखी गई, परन्तु उस का प्रभाव आज भी समाज को प्रभावित कर रहा है।

प्रश्न 5. 'भाषा को सहूलियत' से बरतने से क्या अभिप्राय है ?
उत्तर :– कोई भी कवि जो भी रचना लिखता है, उस में उसकी बात सरल सहज होनी चाहिए। उसमें भाषा का आडंबर नहीं होना चाहिए। क्योंकि सहज सरल भाषा में कही गई बात सब को समझ आती है।

प्रश्न 6. बात और भाषा परस्पर जुड़े होते है किन्तु कभी कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढी हो जाती है –कैसे ?
उत्तर :– बात को कहने का माध्यम भाषा होती है । परन्तु कभी कभी बात भाषा के चक्कर में फँस जाती है अर्थात् बात को कहने के लिए चमत्कारी शब्दों और अलंकारो आदि का प्रयोग करने से बात को समझना कठिन हो जाता है, अर्थात् सीधी बात भी टेढी हो जाती है।

प्रश्न 7. वाहवाही और समर्थन से क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं –लिखिए।
उत्तर :– समर्थक अपने आदर्श की प्रशंसा करते है और उनकी प्रशंसा सुनकर कोई भी गुमराह हो सकता है। कुछ ऐसा ही कवि के साथ
हुआ। वह तमाशबीनों की शाबाशी से प्रभावित हो कर भाषा को जटिल बनाता चला गया। उस का दुष्परिणाम ये हुआ कि कवि की बात समझने लायक ही नहीं रही।

प्रश्न 8. कवि को पसीना किसलिए आ गया ?
उत्तर :– कवि अपनी बात को सरल भाषा में नहीं कह सका। परिणाम स्वरूप कवि की भाषा जटिल हो गई। कवि ने अपनी बात को भाषा के चक्कर से निकालने के लिए अनेक यत्न किये, परन्तु वह सफल नहीं हो सका। इसी लिए उसे पसीना आ गया।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM